Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-IV APRIL 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

वैश्वीकरण और मीडिया

डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर
स्वा. सावरकर महाविद्यालय, बीड.

दुनिया में मीडिया है और मीडिया में दुनिया।, ``मीडिया राष्ट्रीय इतिहास, देश की गौरव, गरिमा, संस्कृति व सभ्यता, पूर्वजों के अनुभूत विचारों, रहन-सहन व परंपरा से न केवल परिचय कराता है, वरन् देश की सामयिक, राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक नीति में हो रही उलट-फेर, शासन शाषितों में मनमुटाव पनप रही सांस्कृतिक विकृतियाँ, तांडव करता दुष्कृत्य दानव की जानकारी सहज रूप में उपलब्ध कराता है।`` मीडिया समाज के चेहरे के सौन्दर्य या दाग को दिखने का सुन्दर आईना है।

वैश्विकरण में आज टी.वी. अखबार इन्टरनेट समाज का अपरिहार्य अंग है वही मीडिया का सर्वग्राही रूप भी। सच कहे तो मीडिया का आधुनातन रूप `संचार` हो गया है। संचार का सहज अर्थ है- `प्रसारण या फैलाना` अर्थात सूचनाओं, समाचारों, विचारों-आचारों को अनेक माध्यमों से जन साधारण तक पहुँचना। मीडिया वह माध्यम है- जिससे समाज का विशेष रिश्ता है, सम्बन्ध है, सरोकार है। मीडिया का समाज व संस्कृति से सरोकार समझने के लिए निम्न रूपों का समझना उचित होगा-

१. **शब्द मीडिया -** समाजचार पत्र, पत्रिकाएँ
२. **श्रव्य मीडिया -** रेडियो
३. **दृश्य मिडिया -** टी.वी., विडियो, फिल्में एवं कम्प्यूटर।``

आज समाज इन माध्यमों का आदि हो चुका है। इसके बिना विकास की कल्पना भी अकल्पनीय है, ``सुबह उठते ही चाय के प्याले हर होठ तथा अखबार के पृष्ठों पर जब तक दृष्टि न पड़ जाए, हमे लगता है, संसार से कट गये हैं, जीवन से हट गए हैं। आज समाचार में राजनीतिज्ञ शतरंज की गोटियाँ ढूंढ़ता है, वहीं पढ़े लिखे बेरोजगार अपनी रोटियाँ।``[३]

समाज के लिये श्राव्य मीडिया (रेडियो) का योगदान भी अमिट है। सेट भले ही छोटा है, पर वह शक्तिशाली स्वर-साधन है, ``हम दिन भर के थके-थकाये सायंकाल घर लौटे, विश्राम को जी चाहे, थक-हार, खाट पर लेटे, मन चाहता है दिन भर की खीझ जाती रहे! बस रेडियो का बटन दबा दें। सहसा गूंज उठेगा कोई मधुर गीत, कोई लोकगीत, कोई फिल्मी गाना। हृदय स्वरों के हिंडोलों पर झूमने लगेगा। सारा ध्वनि सांर हमारे संकेतों पर नाचने लगेगा-ता-ता थैया! ता-ता थैया! उसके साथ नाच उठेगा हमारा मन भी हृदय भी``[४] रेडियो सस्ता व सुलभ साधन होने से दृश्य मीडिया की अपेक्षा आज भी गावों में अपना पैर जमाया हुआ है।

आज मानवीय संवेदनीय संवेदनाएँ एकदम संचार के एक कोने से दूसरे कोने में प्रकट हो जाती हैं और भावनाओं के इस समुद्र को उजागर करने शायद आज का सशक्त माध्यम है- दूरदर्शन। दूरदर्शन में धारावाहिकों का पहरा समाज के असली चेहरों पर हैं। घर-घर की कहानी का हू-ब-हू चित्रांकन से वह समाज से सीधा जुड़ गया है, जिससे दूरदर्शन व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता बन गई है।

दूरदर्शन की तरह श्राव्य, दृश्य एवं पठनीय मीडिया के रूप में आज अति लोकप्रिय हो चुका है- कम्प्यूटर, ``एक जमाना था जब `रोबोट` की तरह सिर्फ एक ही तरह का काम कर सकता था। अब मनुष्य के दिमाग ने उसे ऐसा दिमाग दे दिया है कि लगता है कि वह हमने आगे बढ़ जायेगा। इस अनोखे इलेक्ट्रानिक दिमागों के करतब ने हमारे दिमागों को चकित कर दिया है।``[५] मस्तिष्क को मानव द्वारा संबोधित किया जाने वाला यह यंत्र व्यापार उद्योग, सेना, प्रशासन और फिल्म आदि अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रशंसनीय भूमिका का निर्वाह कर रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी ऐसे मशीनी मानव ने अपने चरण पसार दिये हैं।``[६] खास कर इंटरनेट की सुविधा ने कम्प्यूटर को सर्वग्राही, सर्वोपयोगी बना दिया है।

सचमुच मीडिया ने समाज को आज खास मुकाम दिया है, समाज का सहचर-साहस मीडिया ने दिया उन्हें- **सूचनाओं का भंडार, अवसर का संचार। विज्ञान-समृद्धि, ज्ञान में वृद्धि। भ्रष्ट की पहचान, हकीकत का प्रमाण।** इस तरह मीडिया ने जीवन को व्यापक अर्थ दिया है, अपनी व्यापकता में समस्त विश्व को लघु कर दिया है।

अतएव सामायिक समाज को शिक्षा, सूचना के साथ स्वस्थ्य मनोरंजन की महती आवश्यकता है, जिससे जीने की लय संस्कृतिमय हो सके। मानवीयता की विराट अभिव्यक्ति में संकुचित, व अमर्यादित विचारों का बौनापन दब जाना चाहिए। ऐसे ही प्रस्तुति की शक्ति जन-जन के वक्ष में साक्ष्य की भाँति अमिट, शाश्वत् व चिरस्मरणी शील रहेगी। वह बात चिरंतन सत्य है कि संस्कृति में समाज को संस्कार दिया, वहीं मीडिया ने उन्हें आकार दिया। समाज की कोंक में मीडिया को पालना है और मीडिया के अनुरूप समाज को ढालना है।

संदर्भ सूची :

१. चंद्रशेखर सिंह साहित्य जगत और समाचार जगत का अंतर संबंध, शोध आलेख, पृत्र - ०१
२. डॉ. राजेन्द्र मिश्र, हिन्दी भाषा और संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ. ५१,५२
३. चंद्रशेखर सिंह, साहित्य जगत और समाचार जगत का अंतर संबंध, शोध आलेख, पृ. ०१
४. श्यामचंद्र कपूर - हिंदी निबंध, सौरभ ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, पृ. ९७
५. श्यामचंद्र कपूर - हिंदी निबंध, सौरभ ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, पृ. १०१, १००
६. डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित, आधुनिक हिन्दी निबंध, प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, पृ. १८०

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com